

एक विचार : एक पथ

सौजन्य :

पूज्य पिताजी स्व. पृथ्वीराजजी बैंगानी की पुण्य स्मृति में सुपुत्र सोहनलाल,
सुपौत्र विमल कुमार, ललितकुमार, प्रपौत्र पारस, गौरव बैंगानी
बीदासर—कोलकाता



जैन विश्व भारती प्रकाशन

एक विचार : एक पथ

आचार्य महाप्रज्ञ

संपादक :

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

प्रकाशक :

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राज.) 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : 01581-222080/224671 फैक्स : 01581-223280

e-mail:secretariatldn@jvbharati.org

ISBN 978-81-7195-216-8

© जैन विश्व भारती

प्रथम संस्करण : 2012

द्वितीय संस्करण : सितम्बर, 2012

मूल्य : साठ रुपये मात्र

मुद्रक : सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर

शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

Ek Vichar : Ek Path by Acharya Mahaparagya

₹ 60

सम्पादकीय

भगवान महावीर की वाणी आगमों के माध्यम से हमें उपलब्ध है। इन आगमों का बहुलांश जिज्ञासा-समाधान, प्रेरणा, स्थिरीकरण आदि के रूप में प्राप्त है। तीर्थकर तुल्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की साहित्य-यात्रा के संदर्भ में भी इस तथ्य को देखा जा सकता है। गुरुदेव तुलसी का इंगित हो, समय की कोई आवश्यकता या मांग हो, आचार्य महाप्रज्ञ ने जो कुछ कहा, जो कुछ लिखा, अथवा लिखाया, वह प्रायः आज हमारे पास साहित्य जगत् की अतुलनीय संपदा के रूप में सुरक्षित है।

सन् १९६७ में मैंने पूज्यवर से प्रार्थना की—‘गुरुदेव! प्रतिदिन पाथेय के रूप में मुझे भी कुछ नया लिखाने का अनुग्रह कराएं, जिससे आलोक प्राप्त कर प्रत्येक पाठक विकास व प्रकाश की यात्रा कर सके।’

आचार्यवर—‘बहुत कुछ लिखा जा चुका है। जिसे स्वाध्याय में रुचि है, उसके लिए पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है।’

मैंने अनुरोध किया—‘पूज्यवर के खजाने से मिलने वाला हर दिन का ज्ञान-रत्न मेरे लिए दिशा-दर्शक होगा और पाठकों के लिए बहुमूल्य थाती।’

१ जनवरी १९६८ से यह लेखन प्रारम्भ हो सके—ऐसी मेरी भावना है। प्रतिदिन एक पैराग्राफ जितना लिखाएं, उसके नीचे उस दिन की दिनांक लग जाएगी। जो पाठक नया विचार पढ़ना पसंद करता है, अपने मन-मस्तिष्क को आध्यात्मिक खुराक देना चाहता है, उसके लिए यह पुस्तक अनुपम पाठ्यका काम करेगी। शासनगौरव मुनिश्री धनंजयकुमारजी भी उस समय वहां उपस्थित थे। उन्होंने मेरी बात का समर्थन करते हुए कहा—‘गुरुदेव! इनकी प्रार्थना औचित्यपूर्ण है। आचार्यवर को ध्यान दिराना चाहिए।’

स्मितवदन आचार्यवर ने फरमाया—‘अब दो व्यक्ति मिल गए। अनुरोध मानना ही होगा।’

और मेरे जीवन की एक नई यात्रा प्रारम्भ हो गई। १. जनवरी १९६८ से प्रारम्भ हुए लेखन के इस सफर से अब तक १० पुस्तकें जनता के हाथों में पहुंच चुकी हैं—१. सुबह का चिन्तन, २. सुप्रभातम्, ३. भीतर की ओर, ४. इक्कीसवीं शताब्दी और जैनधर्म, ५. एकान्त में अनेकान्त और अनेकान्त में एकान्त, ६. जैन योग की वर्णमाला, ७. मंत्र : एक समाधान, ८. प्राच्य विद्या, ९. अनुशासन संहिता, १०. तत्त्व संहिता आदि।

सन् २००८ का मर्यादा महोत्सव कालीन प्रवास आसीन्द (मेवाड़) में था। उस समय पूज्यवर का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं था। एक दिन पूज्यवर ने फरमाया—‘अब इस क्रम को एक बार विराम दे दो।’ पर उस अल्प विराम के बाद भी कई बार फरमाते—‘लो, आज तुम्हें एक नया विचार लिखा रहे हैं।’

यदा-कदा गुरुदेव अपनी डायरी में भी नया विचार अंकित कर लेते। अक्षय-तृतीया, महावीर जयंती आदि विशेष प्रसंग भी विचार संकलन के कार्य को समृद्ध कर देते। इस तरह समय-समय पर आलेखित विचारों को मैंने इस पुस्तक में गुफित करने का प्रयास किया है।

मैं अपना सौभाग्य मानती हूं कि ज्ञान के दिव्य प्रकाशपुंज आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में कुछ प्रकाश-रश्मियां बटोरसे का मुझे अवसर मिला। वे रश्मियां मेरे जीवन को अनवरत आलोकित करती रहेंगी। आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य के संयोजन-सम्पादन का दायित्व वर्षों से शासनगौरव मुनि धनंजयकुमारजी निभा रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक के आकल्पन में भी उनका सहकार बना रहा है, सादर कृतज्ञ हूं।

१५ जनवरी, २०१२
आमेट (राज.)

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

अनुक्रम

१. आंख और प्रकाश	१५	१२. रास्ता हिंसा और अहिंसा का	२६
२. विनप्रता	१६	१३. ठहरो	२७
३. मैं मुनि हूँ	१७	१४. तुम धन्य हो	२८
४. सचाई क्या है?	१८	१५. मूल्यांकन जल का	२९
५. सर्वज्ञता की बहिन	१९	१६. स्मृति और विस्मृति	३०
६. केवल जानता हूँ	२०	१७. प्रमाद	३१
७. हो सकता है ग्रन्थि-मोक्ष	२१	१८. भीतर का चोर : भीतर की बेड़ी	३२
८. सादि अथवा अनादि?	२२	१९. प्रयोजन और क्रिया	३३
९. आकर्षण किसके प्रति	२३	२०. चक्षुष्मान कौन?	३४
१०. आस्तिक और नास्तिक	२४	२१. अध्यात्म	३५
११. कसौटी	२५	२२. अध्यात्म का चन्द्रमा	३६

२३. भीतर है चांदनी	३७	३६. पैसा और धर्म	५०
२४. अपना शासन : अपना अनुशासन	३८	३७. मूल्य धर्म और सम्प्रदाय का	५१
२५. साधना का उद्देश्य	३९	३८. दृष्टिकोण और विश्वास	५२
२६. ध्यान	४०	३९. हृदय परिवर्तन	५३
२७. जरूरी है लक्ष्य की स्पष्टता	४१	४०. चेतना की भूमिकाएं	५४
२८. कायोत्सर्ग	४२	४१. हिंसा और अहिंसा	५५
२९. ईश्वर और श्वास	४३	४२. अहिंसा : विश्वास	५६
३०. मौन	४४	४३. अहिंसा और अनेकांत दर्शन	५७
३१. आचार मीमांसा	४५	४४. अहिंसक समाज	५८
३२. कौन बड़ा और कौन छोटा ?	४६	४५. हिंसा का कारण	५९
३३. मैं मनुष्य हूँ	४७	४६. अहिंसा प्रशिक्षण	६०
३४. धर्म का पौधा	४८	४७. अर्थ और उपभोग	६१
३५. प्रश्न धर्म की कसौटी का	४९	४८. कौन कर सकता है विसर्जन ?	६२

४६. प्राथमिकता का प्रश्न	६३	६२. शान्ति और सुख	७६
५०. जल में कमल	६४	६३. क्षान्ति, शान्ति और सुख	७७
५१. चिन्तनीय प्रश्न	६५	६४. कहाँ हैं सुख और दुःख का स्रोत	७८
५२. गरीब कौन?	६६	६५. दुःख और सुख का हेतु	७९
५३. परिवार और शान्ति	६७	६६. सुख और दुःख	८०
५४. परिवार में कैसे रहें?	६८	६७. मैं दुःखी नहीं हूँ	८१
५५. विकास की अवधारणा	६९	६८. स्वास्थ्य और इन्द्रिय संयम	८२
५६. विकास का संकल्प	७०	६९. संकल्पशक्ति और स्वास्थ्य	८३
५७. समस्या और समाधान	७१	७०. नियंत्रण प्रणाली	८४
५८. उलझन से परे	७२	७१. आत्मचिंतन : आत्ममंथन	८५
५९. स्वार्थों का सामज्जस्य	७३	७२. मैं कौन हूँ? (१)	८६
६०. सूक्ष्म है शक्ति का स्रोत	७४	७३. मैं कौन हूँ? (२)	८७
६१. सुखी कौन?	७५	७४. स्वदर्शन	८८

७५. भीतर ज्ञांको	८६	८८. शब्द की संयोजना और	
७६. समाधि	८०	साहित्य	१०२
७७. आत्मा और शरीर	८१	८९. अनुभव और शब्द	१०३
७८. त्राण है आत्मा	८२	९०. वाक् कौशल	१०४
७९. अपना घर	८३	९१. प्रवचन क्यों?	१०५
८०. किसकी सुरक्षा?	८४	९२. नया और पुराना	१०६
८१. दृष्टिकोण	८५	९३. भाग्यशाली कौन?	१०७
८२. शिक्षा और जीवन मूल्य	८६	९४. ज्ञान	१०८
८३. कर्तव्य और परम कर्तव्य	८७	९५. इन्द्रिय-ज्ञान की सीमा	१०९
८४. जीवन क्या है?	८८	९६. अतीन्द्रिय-ज्ञान	११०
८५. जीवन की समग्रता	९६	९७. ज्ञेय और ज्ञान	१११
८६. लेखा-जोखा किसका?	१००	९८. मनन का मूल्य	११२
८७. क्षणभंगुरता	१०१	९९. अनंत हैं ज्ञेय और ज्ञान	११३

१००. प्रश्न प्रमाण का	११४	११३. सहिष्णुता	१२७
१०१. स्थूल दृष्टि : सूक्ष्म दृष्टि	११५	११४. तेरापंथ	१२८
१०२. अनेकान्त	११६	११५. रहस्य संघ की वर्धमानता का	१२९
१०३. आवश्यक है समन्वय	११७	११६. अनुशासन (१)	१३०
१०४. जड़ को देखो	११८	११७. अनुशासन (२)	१३१
१०५. मैत्री का नया प्रकल्प (१)	११९	११८. अनुशासन (३)	१३२
१०६. मैत्री का नया प्रकल्प (२)	१२०	११९. आत्मानुशासी कौन ?	१३३
१०७. कर्म और पुरुर्जन्म	१२१	१२०. मर्यादा : विकास और	१३४
१०८. स्वास्थ्य का सूत्र	१२२	सफलता	
१०९. कषाय-शमन का प्रयोग	१२३	१२१. शक्तिशाली प्रबंधन के सूत्र	१३५
११०. 'मैं' को भी देखो	१२४	१२२. महान् कौन ?	१३६
१११. द्रौपदी का चीर	१२५	१२३. गुरु (१)	१३७
११२. वृत्ति-परिष्कार	१२६	१२४. गुरु (२)	१३८

१२५. आचार्य तुलसी (१)	१३६	१३६. जन्म दिन	१५०
१२६. आचार्य तुलसी (२)	१४०	१३७. दीक्षा	१५१
१२७. आचार्य तुलसी (३)	१४१	१३८. गुरु पूर्णिमा	१५२
१२८. बिन्दु और सिन्धु	१४२	१३९. वर्षावास : चतुर्मास	१५३
१२९. सत्यं शिवं सुन्दरम्	१४३	१४०. संदेश पर्युषण पर्व का	१५४
१३०. संस्कार-निर्माण	१४४	१४१. पर्युषण का मर्म	१५५
१३१. नया वर्ष	१४५	१४२. संवत्सरी (१)	१५६
१३२. होली	१४६	१४३. संवत्सरी (२)	१५७
१३३. महावीर (१)	१४७	१४४. स्वाध्याय का जगत्	१५८
१३४. महावीर (२)	१४८	१४५. चंचलता	१५९
१३५. अक्षय तृतीया	१४९	१४६. विवेक-दर्शन	१६०

आंख और प्रकाश

प्रकाश को देखने के लिए आंख जरूरी है।

आंख को देखने के लिए प्रकाश जरूरी है।

सापेक्ष दृष्टिकोण के बिना आंख और प्रकाश—दोनों मूल्यहीन हो जाते हैं।

विनप्रता

विनप्रता का अपना मूल्य है। विनप्र का कोई उन्मूलन नहीं कर सकता।

समुद्र ने वेत्रवती नदी से कहा—तुम एक भी बेंत अपने साथ नहीं लाती हो।

नदी बोली—क्या करूँ? मैं आती हूँ तब वे झुक जाते हैं। मैं आगे बढ़ती हूँ तब फिर सिर ऊंचा कर खड़े हो जाते हैं।

मैं मुनि हूं

मैंने 'अहं' के अर्थ को समझने का प्रयत्न किया है, इसलिए मैं
मुनि हूं।

मैंने 'मम' के अर्थ को समझने का प्रयत्न किया है, इसलिए मैं
मुनि हूं।

मैंने 'अहं' और 'मम' के विसर्जन का प्रयोग किया है, इसलिए मैं
मुनि हूं।

सचाई क्या है?

जब मैं अकेलेपन की अनुभूति करता हूँ तब व्यवहार मुझसे दूर
चला जाता है।

‘मैं समाज का अंग हूँ’ इस अनुभव के साथ व्यवहार मेरे चारों ओर
घेरा डाल देता है।

सचाई क्या है?

मैं अकेला हूँ? या समाज?

सर्वज्ञता की बहिन

जो अतीत का मूल्य नहीं जानता, वह अपनी अस्मिता को नहीं पहचान सकता।

जो वर्तमान का मूल्य नहीं जानता, वह युग चेतना को स्पन्दित नहीं कर सकता।

जो भविष्य का मूल्य नहीं जानता, वह आने वाली पीढ़ी को संपन्न नहीं बना सकता।

मैं वर्तमान को अतीत के संदर्भ में पढ़ता हूं और भविष्य को वर्तमान के संदर्भ में। इसीलिए मेरा वर्तमान त्रैकालिक है। क्या त्रैकालिकता सर्वज्ञता की छोटी बहिन नहीं है?

केवल जानता हूं

मैं पदार्थ जगत् को जानता हूं, उसका उपभोग भी करता हूं, पर
पदार्थ जगत् में रहता नहीं हूं।

मैं चेतना जगत् को जानता हूं। वह मेरे अस्तित्व का आधार है।
मैं पदार्थ जगत् से परे चेतना के जगत् में रहने का अभ्यास करता हूं।
इसीलिए मैं पदार्थ जगत् से उपजने वाली समस्या से आक्रान्त नहीं
होता, उसका समाधान खोजता हूं।

हो सकता है ग्रन्थि-मोक्ष

समस्या को सुलझाने के लिए भौतिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से जैसे विचार किया जाता है, वैसे ही अहिंसा और अनेकान्त दृष्टि से विचार किया जाए तो रेशम की गांठ भी खुल सकती है।

सादि अथवा अनादि?

अर्थ, अहम् और प्रदर्शन—इन तीनों की निकटता को बताने वाला या समझाने वाला कोई शाश्वत दर्शन अभी प्रत्यक्ष नहीं है।

इस प्रश्न का उत्तर भी अप्राप्त है कि इनका संबंध सादि है या अनादि?

आकर्षण किसके प्रति

शरीर के प्रति जितना आकर्षण है उतना आत्मा के प्रति नहीं। ऐसा क्यों? यह प्रश्न अस्वाभाविक भी नहीं है।

समाधान के लिए लम्बी यात्रा की जरूरत नहीं है। इसका उत्तर तुम्हारे पास है।

प्रत्यक्ष के प्रति जितना आकर्षण होता है उतना परोक्ष के प्रति नहीं।

आस्तिक और नास्तिक

आस्तिक कौन ? नास्तिक कौन ?

मैं खोज रहा हूं इस प्रश्न का उत्तर। मैंने आस्तिक कहलाने वाले व्यक्तियों के चिन्तन और व्यवहार में नास्तिकता का दर्शन किया। अनेक नास्तिक कहलाने वाले व्यक्तियों के चिन्तन और व्यवहार में आस्तिकता भी परिलक्षित हुई।

बहुत कठिन है आस्तिक और नास्तिक की पहचान। क्योंकि बाजार और ऑफिस में आस्तिकता और नास्तिकता की भेदभाव संकड़ी हो रही है।

कसौटी

अच्छे समाज की कसौटी है—अच्छा व्यक्ति।

अच्छे राष्ट्र की कसौटी है—अच्छा समाज।

जैसा व्यक्ति वैसा समाज।

जैसा समाज वैसा राष्ट्र।

रास्ता हिंसा और अहिंसा का

‘मैं और मेरा’—यह रास्ता हिंसा की ओर ले जाता है।

‘मैं और मेरापन का विसर्जन’—यह रास्ता अहिंसा की ओर ले जाता है।

ठहरो

तुम कहते हो—चलो।

मैं कहता हूँ—ठहरो।

तुमने कहा—चलना जरूरी है।

मैंने कहा—भाई! तुम चलते रहे इसीलिए समस्याएं बढ़ी हैं।

यदि ठहर जाते तो इतनी समस्याएं नहीं बढ़ती।

तुम धन्य हो

क्या तुमने उन लोगों को देखा है जो परिस्थिति और मनःस्थिति में
सामंजस्य स्थापित कर रहे हैं?

यदि देखा है तो तुम धन्य हो।

मूल्यांकन जल का

आप मुझे सुनना चाहते हैं।
मैं वर्षा को सुन रहा हूँ।
वह कह रही है—जल का अपव्यय मत करो।
जो मुफ्त मिलता है, उसका मूल्यांकन करो।

स्मृति और विस्मृति

स्मृति और विस्मृति—दोनों का अपना स्वतंत्र मूल्य है। किसे भूलना चाहिए और किसे याद रखना चाहिए—यह विवेक जरूरी है।

आज की समस्या यह है—जिसकी स्मृति होनी चाहिए, उसे भूल रहा है और जिसकी विस्मृति होनी चाहिए, उसकी स्मृति कर रहा है।

वर्तमान युग में तनाव और अशान्ति का यह प्रमुख कारण है।

प्रमाद

मैं भूल गया—यह विस्मृति प्रमाद है।

मैं स्वाध्याय करने बैठा था किन्तु राजनीति की कथा में उलझ गया।
लक्ष्य को छोड़ अलक्ष्य में जाना प्रमाद है।

भीतर का चोर : भीतर की बेड़ी

अपने घर में घुसे हुए हैं दो चोर। एक है इन्द्रियों की आसक्ति और दूसरा है कषाय की उत्तेजना।

बाहरी चोर को बांधने के लिए मनुष्य के पास बेड़ी है।

भीतर घुसे हुए चोरों को बांधने के लिए वह बेड़ी नहीं बना रहा है।

क्या शुभ भावना से बनी हुई बेड़ी उन्हें नहीं बांध सकती ?

प्रयोजन और क्रिया

प्रयोजन बदलता है, क्रिया बदल जाती है।

शीशे में अपना मुँह देखने वाला देखता है आंख खोलकर।

मैं नींद में कैसा लगता हूँ—वह शीशे में देखता है आंख मूँदकर।

क्रिया को देखो, उससे पहले देखो उसका प्रयोजन।

चक्षुष्मान कौन ?

चक्षुष्मान वह होता है—

१. जिसका कषाय उपशांत होता है।
२. जो वाणी का संयम करना जानता है, जो कटु और आक्षेपात्मक शब्दों का प्रयोग नहीं करता।
३. जो हर कार्य परमार्थ (निर्जरा) के लिए करता है।

अध्यात्म

सामान्य लोग बुद्धि की सीमा पर अटक जाते हैं। ध्यान के द्वारा इस सीमा को पार किया जा सकता है।

जब इमोशन्स पर नियंत्रण होता है तब करुणा की चेतना का विकास होता है, संवेदनशीलता का विकास होता है।

करुणा और संवेदनशीलता के विकास से अध्यात्म का प्रारंभ होता है।

करुणा और संवेदनशीलता का विकास होने पर अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

अध्यात्म का चन्द्रमा

चांद आकाश के अंचल को छूता है, चांदनी भूमि के तल को छूने
लग जाती है।

तमस ऊपर भी है, नीचे भी है। बाहर भी है, भीतर भी है।
सबसे जटिल है भीतर का तमस। उसे मिटाने के लिए आवश्यकता
है अध्यात्म के चन्द्रमा की।

अध्यात्म की चांदनी भीतर की चांदनी है। वह न बाहर से आती है
और न किसी के द्वारा प्रद्योतित की जाती है। उसका प्रस्फुटन भीतर में
ही होता है और स्वयं के द्वारा होता है।

भीतर है चांदनी

हम चांदनी से परिचित हैं। आकाश में चांद को देखते हैं, उसकी चांदनी धरती पर चमकती है। मनुष्य शान्ति, शीतलता एवं प्रकाश—सबका एक साथ अनुभव करता है।

अनजाना है चिदाकाश, अनजाना है चांद और अनजानी है चांदनी, इसलिए कि ये सब भीतर हैं। उसे देखने के लिए खिड़कियां, दरवाजे सब बंद हैं।

यदि हम इन्द्रियों की दिशा को बदलें, मन की चंचलता पर अंकुश लगा पाएं तो चेतना की खिड़कियां खुलती-सी नजर आएंगी।

जहां इन्द्रियां, मन, बुद्धि सब विश्राम करने लगते हैं, उस समय आध्यात्मिक चेतना के बीजों का अंकुरण होता है।

अपना शासन : अपना अनुशासन

अध्यात्म का मूल मंत्र है—अपना शासन और अपना अनुशासन।

भगवान् महावीर ने कहा—स्वयं सत्य खोजो और सबके साथ मैत्री करो।

सत्य की खोज अपना शासन है और मैत्री अपना अनुशासन।

‘स्वयं सत्य खोजो’—इस वाक्य ने अध्यात्म की दृष्टि को वैज्ञानिक बनाया है और ‘सबके साथ मैत्री करो’—इस मंत्र-वाक्य ने वैज्ञानिक की संहारक शक्ति पर अनुशासन स्थापित किया है।

साधना का उद्देश्य

साधना का उद्देश्य है—मनुष्य बदले।

बदलने का अर्थ है—

१. मनुष्य मनुष्य के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार करे।
२. प्राणीमात्र के साथ प्राणी जैसा व्यवहार करे।
३. पदार्थ के साथ संयमपूर्ण व्यवहार करे।
४. अपने साथ न्याय करे।
५. दूसरे के साथ न्याय करे।

ध्यान

ध्यान का अर्थ है अंतर्मुखी होना, चेतन मन को सुलाकर अवचेतन मन को जगा देना।

मनोविज्ञान की भाषा में ध्यान का अर्थ है बाह्य मनोवृत्तियों को सुलाकर आंतरिक चेतना को जागृत करना।

ध्यान के द्वारा चेतना का रास्ता बदल जाता है। जो चेतना निरंतर पदार्थ की ओर जा रही है, वह पदार्थ से हटकर भीतर की ओर चली जाती है।

जरूरी है लक्ष्य की स्पष्टता

कार्य प्रारंभ करने से पूर्व लक्ष्य बनाना आवश्यक है। लक्ष्य के बिना विकास संभव नहीं है।

सबसे पहले यह निश्चय करें कि मुझे किस दिशा में आगे बढ़ना है।

लक्ष्य की स्पष्टता होने पर ऊर्जा का सही उपयोग होता है, अन्यथा ऊर्जा छितर जाती है और उसका पर्याप्त लाभ भी नहीं मिलता।

कायोत्सर्ग

पदार्थ का ममत्व शारीरिक, मानसिक और भावात्मक—तीनों प्रकार की समस्याएं पैदा कर रहा है। कायोत्सर्ग केवल शरीर का ही शिथिलीकरण नहीं है, ममत्व के विसर्जन का भी प्रयोग है। इससे शारीरिक, मानसिक और भावात्मक समस्याएं समाहित होती हैं।

ईश्वर और श्वास

आदमी चाहता है ईश्वर से साक्षात्कार। इसलिए वह पूजा करता है, उपासना करता है और भक्ति का प्रयोग करता है पर उसका मन साथ नहीं दे रहा है।

ईश्वर की भक्ति से पूर्व श्वास की भक्ति करो। आते-जाते श्वास पर मन को एकाग्र करो, स्वतः ईश्वर का साक्षात्कार हो जाएगा।

मौन

मौन का अर्थ है बोलने की कला।

मौन का अर्थ न बोलना ही नहीं है। उसका अर्थ है बोलने की अपेक्षा ही न हो।

आचार मीमांसा

आचार के संदर्भ में चार शब्द मननीय हैं—

१. आचार—अकषाय चित्तवृत्ति, शांत कषाय।
२. अनाचार—अकषाय चित्तवृत्ति के लिए विहित यम और नियम का अतिक्रमण।
३. शिथिलाचार—स्वीकृत संकल्प की शिथिलता के कारण होने वाला आचार का अतिक्रमण।
४. दृढ़ाचार—स्वीकृत आचार का दृढ़संकल्प के साथ पालन।

कौन बड़ा और कौन छोटा?

प्रचलित सूत्र है—आचारः प्रथमो धर्मः। महावीर का सूत्र है—पद्मं णाणं तओ दया।

ज्ञान और आचार दूध और शर्करा की भाँति मिले हुए हैं।

‘कौन पहले कौन पीछे’, ‘कौन छोटा कौन बड़ा’—यह निर्णय एकांत दृष्टि से नहीं किया जा सकता।

मैं मनुष्य हूं

जो हमारा मूल है, उसे हम भूल रहे हैं।

चेतना मूल है, वह हमारी स्मृति से ओझल हो रही है।

हमें चेतना का मूल्यांकन करना है। आज चेतना पदार्थ के नीचे दब रही है। इसलिए जड़ तक जाने की जरूरत है—मैं मनुष्य हूं, चेतनावान हूं।

धर्म का पौधा

धर्म का वही पौधा पनपता है जिसकी जड़ उपशम के जल से सोंची जाती है।

धर्म का वही पौधा पनपता है जिसकी शाखाएं साधर्मिक वात्सल्य के प्रोटीन से पुष्ट होती हैं।

प्रश्न धर्म की कसौटी का

वैज्ञानिक युग में कसौटी और परीक्षण के बाद ही किसी सचाई को स्वीकार किया जाता है। आज धर्म के सामने भी प्रश्न है—धर्म को कसौटी पर कसा जाए। जो परम्परा से चल रहा है, श्रद्धा से स्वीकारा जा रहा है, क्या वह बुद्धि और तर्क की कसौटी पर खरा उतर सकता है?

वर्तमान में बुद्धि और तर्क की कसौटी पर खरा उतरने वाला धर्म ही मान्य होगा, ग्राह्य होगा।

पैसा और धर्म

पैसे में शक्ति है, वह प्रत्यक्ष है—इसीलिए उसमें आकर्षण है।

धर्म में शक्ति है, वह परोक्ष है—इसीलिए उसका आकर्षण कम है।

क्या परोक्ष को प्रत्यक्ष किया जा सकता है?

मूल्य धर्म और सम्प्रदाय का

मेरी दृष्टि में

१. उसी सम्प्रदाय का मूल्य है जो विग्रह पैदा नहीं करता।
२. उसी धर्म का मूल्य है जिसकी पृष्ठभूमि में नैतिकता है, प्रामाणिकता है।

दृष्टिकोण और विश्वास

मैंने बाहर की दुनिया को देखा है, भीतर की दुनिया को भी देखा है।

मैंने दूसरों को देखने के साथ-साथ अपने आपको भी देखने का प्रयत्न किया है।

मैंने करुणा और संवेदनशीलता में समस्या का समाधान देखा है।

मैं स्वतंत्रता में विश्वास करता हूँ, साथ-साथ अनुशासन में विश्वास करता हूँ।

अनुशासनहीन स्वतंत्रता को मैं परतंत्रता से भी अधिक खतरनाक मानता हूँ।

हृदय परिवर्तन

लम्बे समय तक व्यवस्था और दण्डशक्ति की छत्रछाया में पलने वाला व्यक्ति और समाज बाहर से सुन्दर लगता रहा किन्तु उसका भीतरी रूप सुन्दर नहीं बन सका। आदमी भीतर से सुंदर बने। उसके लिए आवश्यक है हृदय-परिवर्तन, रासायनिक परिवर्तन।

चेतना की भूमिकाएं

तीन कोटि के लोग होते हैं—

१. अबुद्ध—वे लोग, जो स्वयं हिंसा करते हैं और दूसरों को हिंसा करने के लिए प्रेरित करते हैं।
२. प्रबुद्ध—वे लोग, जिनकी अहिंसा की चेतना जाग चुकी है और उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।
३. संबुद्ध—वे लोग, जो अहिंसक-चेतना की भूमिका में पहुंच चुके हैं।

हिंसा और अहिंसा

हिंसा और अहिंसा का द्वन्द्व अतीत में था, वर्तमान में है और भविष्य में भी रहेगा।

हिंसा से उपजने वाली समस्या का समाधान वे लोग कर सकते हैं, जो हिंसा के कारणों पर विचार करते हैं।

अहिंसा की चेतना का विकास वे लोग कर सकते हैं, जो अहिंसा के साधनों पर विचार करते हैं।

अहिंसा : विश्वास

मैं अहिंसा में विश्वास करता हूं, इसलिए मैं मानवीय एकता में विश्वास करता हूं।

मैं अहिंसा में विश्वास करता हूं, इसलिए मैं असाम्रदायिक चेतना में विश्वास करता हूं।

मैं अहिंसा में विश्वास करता हूं, इसलिए उपभोग के सीमाकरण में विश्वास करता हूं।

अहिंसा और अनेकान्त दर्शन

अहिंसा के तीन पक्ष हैं—कायिक, वाचिक और मानसिक।

वाचिक और मानसिक अहिंसा पर गंभीर चिंतन नहीं हो रहा है इसीलिए अहिंसा के द्वारा समस्या का समाधान जितना होना चाहिए, उतना नहीं हो रहा है।

मानसिक और भावनात्मक हिंसा को समाप्त करने के लिए अनेकान्त का दर्शन जरूरी है। उसके बिना सहिष्णुता, सह-अस्तित्व, सापेक्षता, समन्वय आदि गुणों का विकास नहीं होता।

अहिंसा और अनेकान्त, दोनों को साथ लेकर हम बहुत सारी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

अहिंसक समाज

अनेक लोग अहिंसक समाज रचना का स्वप्न देख रहे हैं। उसे आकार देने के लिए जिसकी अपेक्षा है, उस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

क्या इच्छा का असंयम, सुविधावाद, असीम उपभोग, करुणा का अभाव, संवेदना का अभाव और सहानुभूति की चेतना के अभाव में अहिंसक समाज की संरचना हो सकती है?

अहिंसक समाज का स्वप्न साकार करने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रशिक्षण देना आवश्यक है—

१. इच्छा का संयम, २. श्रमनिष्ठा, ३. उपभोग की सीमा,
४. करुणा की चेतना का विकास, ५. संवेदनशीलता की चेतना का विकास, ६. सहानुभूति की चेतना का विकास।

हिंसा का कारण

हिंसा क्यों बढ़ रही है? उत्तर के दो पहलू हैं—

प्रथम पहलू, जिसका आधार है निमित्त का अभाव।

१. भूखा

२. अपेक्षित जीवन सामग्री का अभाव।

३. इन्द्रियों को उत्तेजना देने वाला वातावरण।

दूसरा पहलू, जिसका आधार है निमित्तों का प्रभाव।

मानवीय चेतना निमित्तों से प्रभावित हो रही है।

इन्द्रियों द्वारा प्रदत्त विषयों से चेतना में आवेश की मात्रा बढ़ जाती है।

अहिंसा प्रशिक्षण

आवश्यक है अहिंसा प्रशिक्षण। गरीब को इसलिए कि वह अभावजनित तनाव के कारण हिंसा में न जाए।

अमीर को इसलिए कि वह वैभव-विलासजनित तनाव के कारण हिंसा में न जाए।

अर्थ और उपभोग

अर्थार्जन की नीति पर बहुत विचार किया जा रहा है, विद्या की अनेक शाखाएं विकसित की जा रही हैं। किन्तु अर्थ के उपभोग और व्यय की कोई नीति निर्धारित नहीं है।

इन दोनों का योग हो जाए तो हो सकता है अनेक समस्याओं का समाधान।

कौन कर सकता है विसर्जन ?

विसर्जन नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। जिस व्यक्ति में अर्थ के प्रति संयम या अर्थ-उपभोग और सुविधावाद के प्रति संयम की भावना होती है, वही व्यक्ति विसर्जन कर सकता है।

प्राथमिकता का प्रश्न

जो सरकार जनता की प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति को प्राथमिकता नहीं देती, वह सरकार जनता की सुख-शान्ति में भागीदार नहीं बन सकती। वह सरकार परोक्षतः जन-समुदाय को अपराध, हिंसा और आतंक की ओर ले जाने के आरोप से मुक्त नहीं रह सकती।

जल में कमल

मैंने व्यक्ति के अर्थ को समझने का प्रयत्न किया है, इसलिए मैं शान्ति से जी रहा हूँ।

मैंने समाज के अर्थ को समझने का प्रयत्न किया है, इसलिए मैं शान्ति से जी रहा हूँ।

मैंने व्यक्ति और समाज के संबंध को समझने का प्रयत्न किया है, इसलिए मैं जल में उत्पन्न पद्म की भाँति अलिप्त होकर जी रहा हूँ।

चिन्तनीय प्रश्न

वर्तमान अर्थनीति और अर्थशास्त्रीय अवधारणा से अमीर अधिक अमीर हो रहा है और गरीब अधिक गरीब। यदि यह सचाई है तो इस पर पुनर्विचार होना चाहिए। जिनके हाथ में सत्ता की बागडोर है उन्हें अवश्य चिंतन करना चाहिए। यदि यह सचाई नहीं है तो उसका युक्तिसंगत निराकरण करना चाहिए।

गरीब कौन ?

सबसे गरीब व्यक्ति वह है जिसके पास चरित्र का धन नहीं है।

सबसे गरीब राष्ट्र वह है जिसके पास चरित्र की मुद्रा का भण्डार नहीं है।

परिवार और शान्ति

समाज संबंधों की श्रृंखला है। उस श्रृंखला में सबसे महत्वपूर्ण इकाई है परिवार। जन्म से लेकर जीवन भर परिवार का संबंध चालू रहता है।

आश्वासन, वात्सल्य, प्रेम परिवार के महत्वपूर्ण अंग हैं।

सहिष्णुता, संवेदनशीलता, सहानुभूति और सहयोग के तंतुओं से बना हुआ धागा परिवार में शान्ति के वातावरण का सृजन करता है।

परिवार में कैसे रहें?

सापेक्ष दृष्टि का विकास करते हुए परिवार में रहें। जैसे स्नाध और रुक्ष एक साथ रहते हैं, शीत और उष्ण एक साथ रहते हैं, नित्य और अनित्य एक साथ रहते हैं, वाच्य और अवाच्य एक साथ रहते हैं, सत् और असत् एक साथ रहते हैं वैसे ही परिवार में विचार की भिन्नता होते हुए भी शान्ति से एक साथ रहें। यह शान्तिपूर्ण सहवास का महामंत्र है।

विकास की अवधारणा

वर्तमान में जो विकास की अवधारणा है, वह अधूरी है। आज आर्थिक विकास और भौतिक विकास द्रुतगति से हो रहा है। आदमी धन के लिए दूसरे को कष्ट दे रहा है इसीलिए आतंकवाद बढ़ रहा है।

आर्थिक विकास और भौतिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास होना जरूरी है। यदि विकास की अवधारणा संतुलित हो तो फिर दूसरों को सताने की बात नहीं होती।

विकास का संकल्प

प्रत्येक व्यक्ति स्वविकास के लिए मंत्रोच्चार के साथ संकल्प करे—
ॐ—चेतना का विकास हो रहा है।

अहम्—योग्यता का विकास हो रहा है।

ऐं नमः—बौद्धिक क्षमता का विकास हो रहा है।

हां—नियंत्रण शक्ति का विकास हो रहा है।

सत्त्व साहूण—आरोग्य और पवित्रता का विकास हो रहा है।

समस्या और समाधान

वर्तमान जन-जीवन समस्याओं से ग्रस्त हो रहा है। हर क्षेत्र में समस्याएं दिखाई दे रही हैं।

हमारी सबसे बड़ी समस्या है अपने आपको न देखना।

समस्या का सबसे बड़ा समाधान है अपने आपको देखना।

आत्मदर्शन और आत्मनिरीक्षण—ये दो उपाय हैं, जिनके द्वारा व्यक्ति असीम सुख और असीम शान्ति का अनुभव कर सकता है।

उलझन से परे

मैं ध्रुव में विश्वास करता हूँ—अपरिवर्तनीय में विश्वास करता हूँ।
मैं अध्रुव में भी विश्वास करता हूँ—परिवर्तन में भी विश्वास करता हूँ।

मैं ध्रुव और अध्रुव—दोनों में विश्वास करता हूँ इसलिए एकांगी दृष्टिकोण से होने वाली उलझन से परे हूँ।

स्वार्थों का सामज्जस्य

स्वार्थ एक सचाई है, सबसे बड़ी प्रेरणा है। इसे झुठलाने का प्रयास न किया जाए।

सफलता के लिए जरूरी है स्वार्थों में सामज्जस्य।

व्यक्ति अपने स्वार्थ को साधने के लिए, अपना हित करने के लिए दूसरे के हितों में बाधा न डाले, यह है स्वार्थों का सामज्जस्य।

सूक्ष्म है शक्ति का स्रोत

मौलिक काम करना चाहते हो तो सूक्ष्म को पकड़ो और मूल्यांकन
चाहते हो तो स्थूल को पकड़ो।

दुनिया स्थूल को महत्व देती है, जबकि शक्ति का स्रोत सूक्ष्म है।

सुखी कौन ?

मैं उस व्यक्ति को दुनिया का सबसे अधिक सुखी व्यक्ति मानता हूँ—

जिसके आवेग और आवेश शांत हैं।

जो सुख से सोता है और सुख से जागता है।

जो प्रचुर धन का स्वामी होने पर भी उपभोग का संयम करता है।

शान्ति और सुख

जीवन की प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती, वहां आदमी
शान्ति से नहीं जी सकता।

शान्ति के बिना सुख कहां ?

क्षान्ति, शान्ति और सुख

आप क्या चाहते हैं? सुख या शान्ति?

यदि आप पहले सुख चाहते हैं तो भ्रान्ति में हैं।

शान्ति के बिना सुख की अनुभूति नहीं हो सकती। क्षान्ति के बिना शान्ति नहीं और शान्ति के बिना सुख नहीं।

कहां है सुख और दुःख का स्रोत

मैं अध्ययन कर रहा हूँ—आदमी सुख चाहता है फिर दुःखी क्यों ?
मैं अध्ययन कर रहा हूँ—आदमी शान्ति चाहता है फिर अशांत क्यों ?
मैं खोज रहा हूँ सुख और दुःख का स्रोत।
मैं खोज रहा हूँ शान्ति और अशान्ति का स्रोत।

दुःख और सुख का हेतु

एक युवक संत के पास आया और बोला—‘दुःख का हेतु क्या है?’
संत ने कहा—‘कामासक्ति।’

युवक—‘दुःख का अन्त कौन कर सकता है?’
संत—‘अनासक्ति की साधना करने वाला।’

दुःख को कम करने का प्रयत्न बहुत हो रहा है, किन्तु वीतरागत
की ओर कदम बढ़ाए बिना उसके अंतिम छोर तक पहुंचना संभव नहीं
है।

सुख और दुःख

मैं आत्मवादी हूँ।

मैं आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करता हूँ, आत्म कर्तृत्व में विश्वास करता हूँ।

आत्मा सुख-दुःख का कर्ता है, इसमें विश्वास करता हूँ।

दुःख आत्मा का स्वभाव नहीं है, इसमें विश्वास करता हूँ।

सुख स्वाभाविक है और दुःख वैभाविक।

मैं दुःखी नहीं हूं

मैं आत्मा को समझने का प्रयत्न करता हूं।

मैं जीवन को भी समझने का प्रयत्न करता हूं।

इसलिए मेरा दृष्टिकोण एकांगी नहीं है, मैं दुःखी नहीं हूं।

स्वास्थ्य और इन्द्रिय संयम

दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य—अधिकांश लोग स्वास्थ्य के बारे में नहीं जानते।

जो जानते हैं वे उस पर विश्वास नहीं करते।

जो विश्वास करते हैं वे उसके अनुकूल आचरण नहीं करते।

इसका कारण है—इन्द्रियों का दबाव।

स्वास्थ्य के बारे में चिन्तन करने वालों को इन्द्रिय-संयम के बारे में अवश्य चिन्तन करना चाहिए।

संकल्पशक्ति और स्वास्थ्य

एक चिकित्सक स्वास्थ्य की देखभाल करता है और रोग का उपचार करता है। इसमें रोगी स्वतंत्र नहीं है। वह चिकित्सक के निर्देशानुसार चलता है। दूसरा व्यक्ति स्वयं अपने स्वास्थ्य की देखभाल करता है और रोग का उपचार करता है। वह उसके हाथ की बात है।

संकल्पशक्ति और प्रयोग के द्वारा व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को अच्छा बना सकता है।

नियंत्रण प्रणाली

शरीर को नियंत्रित करने वाली दो प्रणालियां हैं—

१. रासायनिक नियंत्रण प्रणाली

२. विद्युत् नियंत्रण प्रणाली

रासायनिक नियंत्रण प्रणाली अंतःस्नाकी ग्रन्थियों के स्राव द्वारा शरीर को प्रभावित करती है।

विद्युत् नियंत्रण प्रणाली स्नायु संस्थान की विद्युत् द्वारा शरीर को प्रभावित करती है।

आत्मचिंतन : आत्ममंथन

दो दिन के बीच एक रात और दो रात के बीच एक दिन।
दिन के तीन भाग—प्रातः, मध्याह्न और सायं।
रात्रि के तीन भाग—पूर्वरात्रि, मध्यरात्रि और अपररात्रि।
प्रातः—जागरण, लक्ष्य निर्धारण और संकल्प का समय।
मध्याह्न—कार्य का समय।
सायं—आत्म-निरीक्षण और संकल्प का समय।
पूर्वरात्रि—स्वाध्याय और अनुप्रेक्षा का समय।
मध्यरात्रि—विशिष्ट साधना का समय।
अपररात्रि—ध्यान का समय।
समय का प्रबंधन और सफलता—दोनों में दूरी नहीं है।

मैं कौन हूं? (१)

तुम मुझे नहीं जानते—मैं कौन हूं?

मैं तुम्हें जानता हूं—तुम कौन हो?

तुम मुझे इसलिए नहीं जानते कि तुम देह में रहते हो।

मैं तुम्हें इसलिए जानता हूं कि मैं विदेह में रहता हूं।

मैं कौन हूं? (२)

मैं कौन हूं? इस प्रश्न पर अनगिन व्यक्तियों ने चिंतन किया है, अनगिन लोगों ने इस पर लिखा है। पर आज भी यह एक यक्ष-प्रश्न है। कोई इसका उत्तर नहीं दे सका। जो स्व है, उसका उत्तर दूसरा कैसे दे सकता है?

हमारा व्यक्तित्व शरीर और चेतना दोनों का योग है। चेतना अस्तित्व का प्रस्फुटन है, शरीर उसकी अभिव्यक्ति। चेतना अध्यात्म के निकट है और शरीर बाह्य जगत् के निकट।

स्वदर्शन

१. कोई परमात्मा को देखने की बात करता है, कोई पदार्थ को।
मैं अपने आपको देखने की बात करता हूँ।
२. पदार्थ को देखते-देखते ऊब गया हूँ, पदार्थ और परमात्मा के बीच बहुत दूरी है।
अपने आपको देखने में न दूरी है और न ऊब।
३. मेरे चिंतन के केन्द्र में स्व है, व्यक्ति है। वह सबको प्रिय लगता है।

भीतर ज्ञांको

समस्या भीतर से आती है।

समाधान भी भीतर है।

थोड़ा भीतर ज्ञांको।

भीतर ज्ञांकने से समस्या का समाधान हो रहा है, ऐसा अनुभव होगा।

समाधि

मनुष्य व्याधि, आधि, उपाधि—इन तीनों कष्टों से मुक्त अवस्था में रहना चाहता है। वह अवस्था है समाधि।

इस अवस्था में भावनात्मक और मानसिक कष्ट नहीं होते, शारीरिक कष्ट भी प्रायः नहीं होता और कभी हो भी जाता है तो उसे शान्त भाव से सहने की शक्ति जाग जाती है।

चिकित्सा-शास्त्र में व्याधि-शामक उपाय बतलाए गए हैं। मानसिक चिकित्सा में आधि-शामक उपाय निर्दिष्ट हैं। अध्यात्म-शास्त्र में उपाधि-शामक उपाय की चर्चा की गई है।

उपाधि (भावनात्मक आवेश) का शमन होते ही शारीरिक और मानसिक कष्ट स्वतः कम हो जाते हैं। जैसे-जैसे उपाधि कम होती है, वैसे-वैसे समाधि की अनुभूति होती है।

आत्मा और शरीर

भगवान महावीर के सामने आत्मा प्रधान थी, शरीर गौण। आत्मा के विकास में सहयोगी बने उस शरीर का मूल्य था। वह शरीर मूल्यहीन है, जो आत्मोदय में बाधक बने। आदि से अंत तक आत्मा की परिक्रमा करने वाली चेतना उसी स्वास्थ्य को मूल्य दे सकती है जिसके कण-कण में आत्मा की सहज स्मृति हो।

त्राण है आत्मा

अस्तित्व की दृष्टि से मनुष्य अकेला है। सामाजिक दृष्टि से वह सहयोग का जीवन जीता है। वह एक दूसरे को आश्वासन और त्राण देता है, किन्तु वास्तविक सचाई इससे भिन्न है।

प्रत्येक आत्मा अपने ही सत्-आचरण से अपने आपको त्राण दे सकती है, अपना त्राण बन सकती है।

अपना घर

क्या आपने अपना घर बनाया है?

इसका उत्तर सीधा भी है और टेढ़ा भी है।

अनेक व्यक्ति कह सकते हैं—मेरे पास अपना घर है, मैंने अपना घर बनाया है।

जो घर ईंट, पत्थर, लोहा और सीमेन्ट से बना है, वह अपना घर नहीं है।

अपना घर वीतरागता का घर है, जहां पहुंचने के बाद कुछ भी पाना शेष नहीं रहता।

किसकी सुरक्षा ?

पथिक बोला—आप अकेले हैं। आपके पास कोई सुरक्षा नहीं है?
संत ने कहा—सुरक्षा की जरूरत उसे है, जिसके पास कुछ है। जिसके साथ जीता हूँ वह शरीर भी मेरा नहीं है। फिर किसकी सुरक्षा ?

दृष्टिकोण

जो व्यक्ति पुरुषार्थवाद में विश्वास करता है, वह अपने सकारात्मक दृष्टिकोण के द्वारा दुःख के क्षणों को सुख में बदल सकता है।

जो व्यक्ति आलसी होता है, वह अपने निषेधात्मक दृष्टिकोण से सुख के क्षणों को दुःख में बदल लेता है।

शिक्षा और जीवन मूल्य

समाज और शिक्षा में कोई संबंध है या नहीं?

यदि सम्बन्ध है तो स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए क्या शिक्षा की प्रणाली पर चिन्तन करना आवश्यक नहीं है?

यदि सम्बन्ध है तो मूल्यों की शिक्षा के लिए कोई फेकलटी क्यों नहीं?

जो शिक्षा-संस्थान, धर्मगुरु और सरकार विद्यार्थियों के चरित्र, नैतिक मूल्य और अहिंसा के विकास के लिए सचेष्ट हैं, वे ही अपने पवित्र कर्तव्य की पालन कर रहे हैं।

जिस छात्र-छात्रा को जीवन निर्माण के लिए चरित्र की चेतना को जागृत करने का अवसर नहीं मिलता, वह मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करने वाला मनुष्य नहीं बन सकता।

कर्तव्य और परम कर्तव्य

मनुष्य का मूल्य उपयोगिता के आधार पर आंका जाता है। उपयोगिता के दो चरण हैं—१. कर्तव्य २. परम कर्तव्य।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज की व्यवस्था और उसकी उपयोगिता के आधार पर जो कार्य करता है, वह उसका कर्तव्य है।

मनुष्य चेतनावान है। वह अपनी चेतना की शुद्धि और उसके विकास के लिए जो कार्य करता है, वह उसका परम कर्तव्य है।

जीवन क्या है?

जीवन क्या है?

कुछ है—उसकी स्वीकृति और कुछ नहीं है—उसकी न्यकृति, दोनों
का योग है सचाई।

जीवन एक सचाई है।

जीवन की समग्रता

ज्ञान, शिक्षा और दीक्षा—ये तीन शब्द जीवन की समग्रता का बोध कराने वाले हैं।

अज्ञान अंधकार है। अंधकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए आवश्यक है—ज्ञान।

परिवर्तन की क्षमता के बिना व्यक्ति विकास नहीं कर सकता। परिवर्तन के लिए आवश्यक है शिक्षा, अभ्यास।

अभ्यास के बिना अनिष्ट आदतों को छोड़ा नहीं जा सकता और इष्ट आदतों का निर्माण नहीं किया जा सकता।

अभ्यास की निरन्तरता के लिए आवश्यक है दीक्षा, संकल्पशक्ति का विकास, व्रत का स्वीकार।

लेखा-जोखा किसका?

दुकानदार अपनी आय-व्यय का लेखा-जोखा रखता है।

आश्चर्य है—आदमी अपने जीवन का लेखा-जोखा नहीं रखता।

वर्तमान में धन के आय-व्यय का हिसाब-किताब रखा जाता है,
किन्तु आश्चर्य है कि चेतना के आय-व्यय का हिसाब-किताब नहीं
रखा जा रहा है।

क्षणभंगुरता

मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है। यदि स्थायी-शाश्वत जीवन हो, प्रमाद करें तो कोई बात नहीं। क्षणभंगुर जीवन में यदि प्रमाद करें तो जो संपदा है उससे वंचित रह जाते हैं।

शब्द की संयोजना और साहित्य

प्रत्येक लेखन में शब्द की संयोजना होती है, किन्तु प्रत्येक लेखन साहित्य की वेदी पर अपना आसन नहीं बिछा सकता। साहित्य की कोटि में वही लेखन आता है जिसमें शब्द-विन्यास की कला होती है और स्वल्प शब्दों में महान् अर्थ का समावेश होता है। शब्द और अर्थ, दोनों की सम्यक् युति प्रबुद्ध पाठक के सिर को प्रकंपित कर देती है।

अनुभव और शब्द

अनुभव के पास शब्द नहीं है और शब्द के पास अनुभव नहीं है फिर भी हम अनुभव और शब्द की संयोजना के बिना व्यवहार की भूमिका पर आरूढ़ नहीं हो सकते।

वाक् कौशल

वह व्यक्ति बोलता है, जिसे भाषा की शक्ति प्राप्त होती है।

बोलना एक बात है, बोलने की कला दूसरी बात। वाक्‌पटु व्यक्ति
अपने वाक् कौशल से जनता को मंत्रमुग्ध कर देता है।

प्रवचन क्यों?

उपदेशमनासाद्य पश्यून्ते नरा अपि—उपदेश के बिना मनुष्य भी पशु जैसा व्यवहार करता है। इसलिए समाज में उपदेश और उपदेष्टा की अनिवार्यता होनी चाहिए।

उपदेश का एक सशक्त माध्यम है प्रवचन। प्रवचनकार अपने मति-कौशल से जनता का पथदर्शन करते हैं।

नया और पुराना

मुझे पुराने से मोह नहीं है और नए से घृणा नहीं है।

पुराने का मेरा अर्थ है, जो प्रथम दर्शन में आकर्षक न हो। जैसे-जैसे उपयोग करते हैं, आकर्षण बढ़ता जाता है।

नए का तात्पर्य है, जो प्रथम दर्शन में बहुत आकर्षक, किन्तु धीमे-धीमे उसके प्रति विकर्षण होता चला जाता है।

भाग्यशाली कौन ?

वह भाग्यशाली व्यक्ति है जो अपने अतीत पर गर्व कर सकता है और शुभ भविष्य का निर्माण कर सकता है। जो अपने अतीत पर गर्व नहीं कर सकता और शुभ भविष्य का निर्माण नहीं कर सकता, वह भाग्यशाली नहीं होता।

ज्ञान

हम ज्ञान को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

१. पदार्थ का ज्ञान
२. आत्मा का ज्ञान

पदार्थ का ज्ञान आजीविका के साथ जुड़ा हुआ है और आत्मा का ज्ञान जीवन के साथ। लौकिक जीवन यात्रा को चलाने के लिए पदार्थ का ज्ञान जरूरी है और आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए आत्मा का ज्ञान।

इन्द्रिय-ज्ञान की सीमा

इन्द्रिय की शक्ति बहुत सीमित है। वे मूर्त पदार्थ को जानती हैं, पर उन्हीं को जो स्थूल हैं। परमाणु मूर्त हैं। इन्द्रियां उन्हें नहीं जान सकतीं।

अनन्त परमाणु मिले। एक स्कंध बन गया। उसकी परिणति सूक्ष्म है। इन्द्रियां उसे भी नहीं जान सकती।

इन्द्रियां केवल उसी पदार्थ को जानती हैं जो अनन्त-अनन्त परमाणुओं से बना हुआ है और जिसकी परिणति स्थूल हो गई है।

अतीन्द्रिय-ज्ञान

अमूर्त तत्त्व शब्द, गंध, रस और स्पर्श से अतीत होते हैं। उसके परमाणु पुद्गल के परमाणुओं से भिन्न हैं। वह परम अतीन्द्रिय ज्ञान का विषय है।

अतीन्द्रियज्ञानी ही अमूर्त तत्त्व का साक्षात्कार कर सकता है। इन्द्रियज्ञानी का वह विषय नहीं बनता।

ज्ञेय और ज्ञान

ज्ञेय और ज्ञान के असंख्य पर्याय हैं। एक व्यक्ति और एक प्रवचन सब पर्यायों का अवगाह नहीं कर सकता। इसलिए आवश्यक है अनेक विषयों का अध्ययन और अधीत विषयों पर चिन्तन और मनन।

मनन का मूल्य

विकास का एक सूत्र है मनन करना। एक वाक्य पढ़ो, उस पर मनन करो। एक दिन, दो दिन, दस दिन तक मनन करते रहो। छोटे से वाक्य से इतना अर्थ निकलेगा जैसे गंगोत्री से गंगा बन गई हो।

सबसे मूल्यवान है मनन करना। आज शिक्षा जगत् में इस बात की कमी आ रही है। विद्यार्थी पढ़ना जानते हैं, मनन करना नहीं जानते। आज अपेक्षा है—मनन करने की प्रवृत्ति पुष्ट बने। इससे विकास का स्रोत उपलब्ध हो सकेगा।

अनंत हैं ज्ञेय और ज्ञान

एक द्रव्य, अनंत पर्याय। अस्तित्व का लक्षण है ध्रौव्य। ध्रौव्य की सुरक्षा का कवच है पर्याय, परिवर्तन, उत्पाद और व्यय।

ध्रौव्य ज्ञान का विषय है और पर्याय भी ज्ञान का विषय है। ज्ञान सर्वव्यापी है। जितने पर्याय हैं वे सब ज्ञान के विषय बनते हैं। इस आधार पर एक सूत्र बनता है—ज्ञेय अनन्त हैं और ज्ञान भी अनन्त।

प्रश्न प्रमाण का

दुष्यन्त ने कहा—अंतःकरण की वृत्ति प्रमाण है।
तर्कशास्त्रियों ने कहा—सम्यक् निश्चय प्रमाण है।
कवि ने कहा—मन ही प्रमाण है।
पता नहीं क्या है प्रमाण और क्या है अप्रमाण ?

स्थूल दृष्टि : सूक्ष्म दृष्टि

स्थूल दृष्टि से देखते हैं तो लगता है—मेरे हाथ में डायरी है। यह स्थूल दृष्टि का निर्णय सही है।

सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो न यह डायरी है, न यह ठोस पदार्थ। यह केवल वर्ण, गंध, रस और स्पर्श का एक पुंज है। इन चारों में हमें सबसे अधिक प्रभावित करने वाला है वर्ण। यदि कोई पूछे कि आदमी कैसा है तो उत्तर होता है—जैसा रंग, वैसा आदमी।

अनेकान्त

मेरे सामने दो दृष्टियां हैं—एक शाश्वत और दूसरी अशाश्वत।

मैं न केवल शाश्वत की ओर झुकता हूं और न केवल अशाश्वत की ओर। इसीलिए मैं जो कहता हूं, लिखता हूं, उसे शाश्वतवादी भी सुनना, पढ़ना पसंद करते हैं और अशाश्वतवादी भी।

अनेकान्त का हार्द यही है—सत्य पर न शाश्वतवादी का अधिकार होता है, न अशाश्वतवादी का। उस पर उन्हीं का अधिकार होता है, जो शाश्वत और अशाश्वत—दोनों में समन्वय स्थापित करते हैं।

आवश्यक है समन्वय

मैं अनेकता में एकता को खोज रहा हूँ।

मैं भेद में अभेद को खोज रहा हूँ।

केवल भेद को देखेंगे तो लड़ाई, कलह होगा।

केवल अभेद को देखेंगे तो व्यवहार के वायुयान आकाशीय उड़ान
नहीं भर सकेंगे।

इसलिए आवश्यक है एकता और अनेकता का समन्वय, भेद और
अभेद का समन्वय।

जड़ को देखो

केवल भेद को नहीं, अभेद को भी देखो।

केवल अनेकता को नहीं, एकता को भी देखो।

केवल शाखा और पत्तों को नहीं, जड़ को भी देखो।

जीवन यात्रा को चलाने के लिए अभेद और एकता की उपेक्षा नहीं
की जा सकती।

मैत्री का नया प्रकल्प (१)

मैं अनेकता में एकता को खोज रहा हूं। तात्पर्य में कहूं तो मैं सौहार्द और मैत्री की खोज कर रहा हूं।

मैं भेद में अभेद को खोज रहा हूं। तात्पर्य में कहूं तो मैं अहं को समझने का प्रयत्न कर रहा हूं, संघर्ष की जड़ को पकड़ने का प्रयत्न कर रहा हूं।

मैत्री का नया प्रकल्प (२)

केवल अनेकता को देखने वाला वैचारिक संघर्ष पैदा करता है।

केवल एकता को देखने वाला विकास का दरवाजा नहीं खोल सकता।

केवल भेद को देखने वाला कलह को निमंत्रण देता है।

केवल अभेद को देखने वाला गतिशील नहीं हो सकता।

इसलिए मैंने अनेकता और एकता, भेद और अभेद—दोनों को अपना मित्र बनाने का प्रयत्न किया है।

कर्म और पुनर्जन्म

मैं जीवन को केवल वर्तमान के संदर्भ में नहीं देखता। मैं जीवन को अतीत और वर्तमान—दोनों के संदर्भ में पढ़ रहा हूं। क्योंकि मैं कर्मवाद में विश्वास करता हूं।

मैं जीवन को केवल वर्तमान के संदर्भ में नहीं देखता। मैं जीवन को अतीत और वर्तमान—दोनों के संदर्भ में पढ़ रहा हूं। क्योंकि मैं पुनर्जन्म में विश्वास करता हूं।

स्वास्थ्य का सूत्र

क्रोध का क्षण बहुत लम्बा नहीं होता। उससे उपजने वाली समस्याओं का चीर बहुत लम्बा होता है, द्रौपदी का चीर बन जाता है।

क्रोध मानसिक घटना नहीं है। उसका संबंध भाव-तंत्र से है।

हर आदमी सुखी रहना चाहता है, शान्ति से जीना चाहता है।

सुख-शान्ति का रहस्यपूर्ण सूत्र है स्वास्थ्य। स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण सूत्र है सकारात्मक भाव।

नकारात्मक विचार और भाव किसी को पसंद नहीं है, फिर भी नकारात्मक भाव मनुष्य को प्रभावित करता है। नकारात्मक भावों में अग्रणी है क्रोध। उपशम भाव के विकास के क्रोध का विलय होता है।

कषाय-शमन का प्रयोग

साधना का मार्ग कषाय-शमन का मार्ग है। मोहकर्म की प्रबलता से क्रोध आदि कषाय उत्तेजित होते हैं। इन कषायों का उपशमन करने के लिए मोहकर्म की प्रकृतियों को शांत करने की आवश्यकता है।

मोहकर्म की प्रकृतियों को उपशांत करने के लिए ध्यान का एक महत्वपूर्ण प्रयोग है—ललाट के मध्य ज्योतिकेन्द्र पर श्वेत रंग का ध्यान।

‘मैं’ को भी देखो

विश्व क्या है? यह बहुत विराट् की बात है।
मोक्ष क्या है? यह बहुत दूर की बात है।
मैं क्या हूं? यह निकट की बात है।
केवल विराट् को ही मत देखो।
केवल दूर को ही मत देखो।
निकट को भी देखो, ‘मैं’ को भी देखो।

द्रौपदी का चीर

अहंकार ने माया से कहा—‘मैं कौन हूं? तुम नहीं जानती। मैं जानता हूं कि तुम कौन हो?’

माया ने कहा—घमण्ड मत करो। क्या द्रौपदी के चीर का अंत ले सकोगे?

वृत्ति-परिष्कार

साधना का पहला चरण है परिष्कार। ध्यान के प्रयोग से परिष्कार संभव है। परिष्कार के बिना रूपान्तरण नहीं होता।

जिस प्रकार आयुर्वेद में कच्चा पारा खतरनाक होता है उसी प्रकार अपरिष्कृत (अपरिपक्व) वृत्तियां भी खतरनाक होती हैं।

समस्त वृत्तियों का परिष्कार एक साथ संभव नहीं है, किन्तु प्रयत्न से सफलता भी दूर नहीं रहेगी।

सहिष्णुता

सहिष्णुता एक ऐसा आभूषण है जिसे धारण कर व्यक्ति निर्बाध रूप से साधना के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है तथा अपना जीवन आनंदमय बना सकता है।

सहिष्णुता एक ऐसा मजबूत धागा है जो समूची मानवजाति को एक सूत्र में आबद्ध करता है।

तेरापंथ

तेरापंथ—आत्मा की वेदी पर संयम की प्रतिष्ठा।

जहां संयम है, वहां ज्योतिष्मान् है तेरापंथ।

जहां ज्योति की रश्मियों का वलय है, वहां है तेरापंथ।

रहस्य संघ की वर्धमानता का

वह संघ प्रवर्धमान होता है जिसके प्रत्येक सदस्य के हृदय में ‘अत्तहियटुयाए निज्जरट्टिए’—आत्महित और निर्जरार्थिता का भाव प्रबल होता है।

जिनके रोम-रोम में यह भावना रम जाए कि मुझे आत्महित के लिए जीना है, निर्जरा के लिए कार्य करना है, वे साधु-साधिव्यां धर्मसंघ की जड़ का सिंचन करते हैं।

अनुशासन (१)

समुदायिकता का आधार है अनुशासन, जिसका स्वरूप है प्रवर्तक-निवर्तक, आदेश-निर्देश और विधि-निषेध।

‘यह करो’ ‘यह मत करो’ का निर्देश अनुशासन है।

‘अंगुलि निर्देश करना’ अनुशासन है।

जिस समुदाय में विधि-निषेध नहीं होता, वह निष्प्राण हो जाता है।

अनुशासन (२)

अनुशासन के दो रूप हैं—

१. आत्मानुशासन
२. परानुशासन

आत्मानुशासन के अभाव में परानुशासन किञ्चित्कर अथवा अकिञ्चित्कर होता है। आत्मानुशासन के विकसित होने पर परानुशासन दक्षिण दिशा में चला जाता है।

अनुशासन (३)

अनुशासन के दो रूप हैं—

१. आरोपित अनुशासन

२. हार्दिक अनुशासन

आरोपित अनुशासन से समस्याएं पैदा होती हैं।

हार्दिक अनुशासन से समस्याएं सुलझ जाती हैं।

जो अनुशासन अन्तर्मन से स्वीकृत नहीं होता, उसका सम्यक् पालन कैसे हो सकता है?

आत्मानुशासी कौन ?

वह व्यक्ति आत्मानुशासी होता है—

१. जिसका क्रोध उपशांत है।
२. जिसका अहंकार उपशांत है।
३. जो प्रतिक्षण संतोष की अनुभूति करता है।
४. जो प्रवंचना से दूर रहता है।

मर्यादा : विकास और सफलता

मर्यादा और विकास—दोनों में दूरी नहीं है। जहां मर्यादा है वहां विकास है और जहां विकास है वहां मर्यादा है।

आवश्यक है दोनों के साहचर्य को देखने का अभ्यास।

जहां मर्यादा है वहां विकास, सफलता और महानता बिना निमंत्रण के आते हैं।

हमने इसका अनुभव किया है इसीलिए हम मर्यादा का महोत्सव मनाते हैं।

शक्तिशाली प्रबंधन के सूत्र

वह प्रबंधन शक्तिशाली होता है जहां आज्ञा और धारणा का सम्यक् प्रयोग होता है।

वह प्रबंधन शक्तिशाली होता है जिसमें बड़ों का सम्मान किया जाता है।

वह प्रबंधन शक्तिशाली होता है जहां रोगी और शैक्षि की सेवा को महत्व दिया जाता है।

वह प्रबंधन शक्तिशाली होता है जहां उसके सदस्यों में सामग्री संकलन की क्षमता होती है।

वह प्रबंधन शक्तिशाली होता है जहां आत्मचिन्तन और आत्म-निरीक्षण किया जाता है।

वह प्रबंधन शक्तिशाली होता है जहां सकारात्मक चिंतन का विकास किया जाता है।

महान् कौन?

मैं उसे महान् मानता हूं जो युग की समस्या को समाधान देता है।
मैं उसे महान् मानता हूं, जो तम को प्रकाश में बदल देता है।

गुरु (१)

गुरु के निर्देश में छिपे हुए रहस्यों को पकड़ने का प्रयत्न करो,
सफलता तुम्हारे द्वार पर दस्तक देगी।

गुरु के निर्देश में यदि तर्क करोगे तो कभी भी सफलता के शिखर
पर नहीं पहुंचोगे।

गुरु (२)

अपने मस्तिष्कीय-हृदय में गुरु की प्रतिमा को स्थापित करो।
जो अव्यक्त है वह स्वयं व्यक्त होने लगेगा।
जो अदृश्य है वह स्वयं दृश्य बनने लगेगा।
ध्यान के प्रयोग से गुरु का साक्षात्कार हो सकता है।

आचार्य तुलसी (१)

क्या आप आचार्य तुलसी को जानते हैं?

यदि जानते हैं तो मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

क्या आपने आचार्य तुलसी को देखा है?

मैं सात दशक तक उनके पास रहा, फिर भी उनके अंतस् में
परिस्पन्दित स्पन्दनों को नहीं देख सका।

आचार्य तुलसी (२)

जिनकी ध्वनि आज भी कानों में प्रतिध्वनित हो रही है, जिनका बिंब आज भी आँखों में प्रतिबिंबित हो रहा है, जिनका पारिपाश्विक वातावरण आज भी परिमल बिखेर रहा है, जिनकी रसना के प्रकंपन आज भी जन-जन को रसमय बना रहे हैं, जिनके हाथ का स्पर्श आज भी मस्तक के न्यूरोन्स को स्पन्दित कर रहा है, जिनका चिन्तन आज भी मन को आहार दे रहा है, पोषण दे रहा है, जिनका पवित्र भाव आज भी विभाव को स्वभाव बना रहा है—

इन सप्त धातुओं से निर्मित प्रतिमा के चरणों में इन्द्रिय-चेतना, मनस्‌ चेतना और भाव चेतना का पूर्ण समर्पण।

आचार्य तुलसी (३)

साधु केवल चर्म-चक्षु नहीं होता, वह आगम-चक्षु होता है।

साधु केवल चर्म-चक्षु नहीं होता, वह अंतश्चक्षु होता है।

आचार्य तुलसी का तत्त्वज्ञान बता रहा था कि वे आगम-चक्षु हैं।

आचार्य तुलसी का भविष्य दर्शन बता रहा था कि वे अंतश्चक्षु हैं।

बिन्दु और सिन्धु

जो बिन्दु का मूल्य नहीं जानता, वह सिन्धु का मूल्य कैसे जान सकता है?

जो सिन्धु का मूल्य नहीं जानता, वह बिन्दु का मूल्य कैसे जान सकता है?

यथार्थ यह है—बिन्दु में सिन्धु निहित है और सिन्धु में बिन्दु।

सत्यं शिवं सुन्दरम्

जहां सामुदायिकता है वहां व्यवस्था और अनुशासन अनिवार्य है।
व्यवस्था-प्रबंधन के बिना विकास नहीं हो सकता। बोलने की, खाने
की, सोने की, जागने की व्यवस्था समुचित होनी चाहिए।

व्यवस्था के साथ जुड़ा हुआ है 'सत्यं शिवं और सुन्दरम्'।

संस्कार-निर्माण

हम फसल को सुधारने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम इस बात को भूल जाते हैं कि बीज की ओर ध्यान दिए बिना फसल की ओर ध्यान देना सार्थक नहीं होता।

संस्कार-सुधार की चर्चा करने वाले संस्कार के बीज पर ध्यान कब देते हैं?

संस्कार का बीज है अवग्रह। उसकी उपेक्षा कर संस्कार-निर्माण की प्रक्रिया को गति नहीं दी जा सकती।

नया वर्ष

३१ दिसम्बर, वर्ष की संपन्नता का दिन। १ जनवरी, नए वर्ष का प्रवेश दिन।

प्रवेश और सम्पन्नता, दोनों के बीच झूल रहा है मनुष्य।

समय के आगमन और निर्गमन का लेखा-जोखा करने वाला आदमी अपने जीवन का लेखा-जोखा क्यों नहीं करता? इस प्रश्न का उत्तर खोजना है। समय निरंतर गति से आगे बढ़ता है। इसलिए बढ़ता है कि उसके पास मन नहीं है। मन नहीं है इसका अर्थ है—वह चंचलता से आक्रान्त नहीं है। आदमी के पास मन है और चंचलता है, इसलिए चलते-चलते पैर थम जाते हैं।

नए वर्ष का प्रवेश एकाग्रता के साथ करें और विकास की गति को निरंतरता दें।

होली

बसन्त का आगमन। नया रक्त, नया उल्लास।
किसान इसलिए हर्षित है कि फसल पक गई है।
व्यापारी इसलिए उल्लसित है कि व्यापार बढ़ेगा।
उपभोक्ता इसलिए प्रफुल्ल है कि खाद्य संकट नहीं रहेगा।
कवि इसलिए प्रमुदित है कि बसन्त कविता को नई स्फूर्ति देगा।
साधक इसलिए प्रसन्न है कि सर्दी और गर्मी दोनों की अति से
मुक्त बसन्त साधना के लिए स्वर्णिम अवसर है।
कितना महत्वपूर्ण है होली का पर्व।
नई फसल, नया रक्त, नया उल्लास।
नए उन्मेष का क्षण है होली का पर्व।

महावीर (१)

आज महावीर जयन्ती है। अभी मैं महावीर को समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ इसलिए उनके बारे में जो लिखूँगा, वह अधूरा होगा और जो कहूँगा, वह भी अधूरा होगा।

जब मैं वीतराग बनूँगा तब मेरे सामने महावीर का पूरा चित्र होगा। उस समय मैं जो लिखूँगा और कहूँगा, वह होगी पूरी बात।

महावीर (२)

महावीर को कौन समझ सकता है? महावीर को कौन देख सकता है?

महावीर कौन बन सकता है?

जो अस्वाद की साधना करता है,

जो अप्रमाद की साधना करता है,

जो क्षमा की साधना करता है,

जो ममत्व-विसर्जन की साधना करता है,

जो मृदुता की साधना करता है,

वह महावीर को समझ सकता है, वह महावीर को देख सकता है और
वह महावीर बन भी सकता है।

हम जयन्ती मनाने की कला जानते हैं, किन्तु जयन्ती पुरुष को समझने
की कला नहीं जानते, जयन्ती पुरुष को देखने की कला नहीं जानते। इसीलिए
जयन्ती के आयोजन से जो समाधान होना चाहिए, वह नहीं हो रहा है।

अक्षय तृतीया

अक्षय और क्षय दोनों में सहावस्थान है। फिर भी आदमी अक्षय को अधिक पसंद करता है।

मनुष्य की मनोवृत्ति है कि वह 'अपर' की अपेक्षा 'पर' को अधिक चाहता है।

अक्षय तृतीया का यही संदेश है कि अक्षय को देखो। काम्य वही है।

जन्म दिन

जन्म दिन आत्म-निरीक्षण का दिन है, अपने आपको समझने का दिन है।

मैंने अपने आपको समझने का प्रयत्न किया और आज भी कर रहा हूँ। कितना सफल हुआ, नहीं कह सकता। इतना कह सकता हूँ कि सफलता और असफलता के बीच झूलते हुए सफलता का पथ खोजने में सफल हुआ हूँ।

दीक्षा

सामाजिक जीवन का आधार है संबंध, संयोग।

मुनि दीक्षा का अर्थ है संयोग और संबंध से मुक्त जीवन।

गृहस्थ-जीवन का आधार है घर। मुनि का जीवन होता है अनिकेत।

बाह्य और आंतरिक परिग्रह से मुक्त जीवन शैली का नाम है मुनि दीक्षा।

गुरु पूर्णिमा

गुरु पूर्णिमा का दिन। हम गुरु की खोज करें।
बहुत मुश्किल है गुरु को खोजना।
लघुता के बिना गुरु को खोजा नहीं जा सकता।
लघुता पसन्द नहीं है। पसन्द है गुरुता।
गुरु गुरु को कैसे खोज सकता है?

वर्षावास : चतुर्मास

आकाश की ओर देखें तो वर्षावास और समय की ओर देखें तो चतुर्मास। साधना की दृष्टि से अन्तःप्रवास।

कितना अच्छा हो कि हम देश और काल की सीमा को समझते हुए अपनी सीमा को भी समझ सकें और अन्तश्चेतना में प्रवास कर सकें।

संदेश पर्युषण पर्व का

तुम कहां रहते हो ? आत्मा में या शरीर में ?

यदि आत्मा में रहते हो तो तुम्हारा अस्तित्व त्रैकालिक है।

यदि शरीर में रहते हो तो तुम्हारा व्यक्तित्व अल्पकालिक है।

स्वल्प के लिए बहुत की उपेक्षा मत करो।

यह है पर्युषण पर्व का संदेश।

पर्युषण का मर्म

साधना का शिरोमणि शब्द है उपशम।

उपशम की साधना का शिरोमणि समय है पर्युषण।

जो अपने भीतर नहीं रहता, अपने आप में नहीं रहता, वह पर्युषण के मर्म को नहीं पकड़ सकता। पर्युषण के मर्म को पकड़े बिना व्यक्ति अपने आप में नहीं रह सकता।

संवत्सरी (१)

वर्ष एक, दिन ३६५। हर दिन सूर्य आता है, प्रकाश देता है। जब तक सूर्य तब तक दिन। यह काल का क्रम है।

काल के साथ चेतना संबद्ध होती है तब दिन अन्य दिनों से भिन्न हो जाता है। संवत्सरी का इसीलिए महत्व है कि इसके साथ वीतरागता की अनुभूति करने का संकल्प जुड़ा हुआ है।

संवत्सरी (२)

संवत्सर का एक दिन—संवत्सरी।

क्या इसे कोई ग्रह बलवान बना रहा है या कोई नक्षत्र योग ?

क्यों दिया जा रहा है इसे इतना महत्व ?

ग्रह और नक्षत्र से परे है मानवीय चेतना। यह मानवीय चेतना के ऊर्ध्वरोहण का दिन है। वही कर रहा है इसमें महिमा का बीजारोपण।

स्वाध्याय का जगत्

ज्ञान का माध्यम बनने वाली दो प्रमुख इन्द्रियां हैं—आंख और कान।
एक आदमी आंख से देखता है। वह कितना देख पाता है?
एक आदमी कान से सुनता है। वह कितना सुन पाता है?
आंख और कान का जगत् सीमित है। जो स्वाध्याय करता है उसका
जगत् विराट् बन जाता है।

चंचलता

बुरी आदत को बदलने के लिए अच्छी आदत डाली जाती है। एक प्रकार की चंचलता को मिटाने के लिए हम दूसरे प्रकार की चंचलता का सहारा ले रहे हैं। पुरानी चंचलता को मिटाने के लिए नई चंचलता को अपना रहे हैं। ऐसा करते-करते एक दिन ऐसा भी आएगा कि सारी चंचलता मिट जाएगी, समाप्त हो जाएगी।

विवेक-दर्शन

चेतन और देह के भेद का ज्ञान—मैं चेतन हूं, मेरा शरीर अचेतन है। मैं अविनाशी हूं, यह नश्वर है। मैं पुनर्भवी हूं, यह एकभवी है। इसलिए हम दोनों एक नहीं—दो हैं। इस विवेक-दर्शन से स्व-देहासक्ति का विलय होता है।